सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, सितम्बर-अक्टूबर 2020

यीशु के प्रेम की शक्ति

"फिर उसने (यीशु ने) उन सब पर दृष्टि डालकर उस से (जिसका दाहिना हाथ सूखा था) कहा, "अपना हाथ बढ़ा!" और उसने ऐसा ही किया और उसका हाथ पूर्णतः चंगा हो गया। इस पर वे आपे से बाहर होकर आपस में तर्क-वितर्क करके कहने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?

इन्हीं दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने गया और उसने सारी रात परमेश्वर से प्रार्थना करने में व्यतीत की। जब दिन निकला तो उसने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और उनमें से बारह को चुनकर उन्हें 'प्रेरित' नाम दिया, अर्थात् शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा, और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, और शमौन जो उत्साही भक्त कहलाता है, और याकूब का बेटा यहूदा, और यहूदा इस्करीयोती जो विश्वासघाती निकला।

तब वह उनके साथ नीचे उतरकर समतल स्थान पर खड़ा हुआ और उसके चेलों की एक बड़ी भीड़ के साथ समस्त

.....यीशु के प्रेम.. पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे

विश्राम के लिए यीशु के पास आना

आजकल लोगों का जीवन इतना उलझ गया है कि वे आसान उपाय को तुच्छ समझते है। आदमी की समस्याएं, उनके दिलों को कुतरकर खाते जाते है जब तक वो या तो अचानक बीमार हो जाते हैं या फिर मौत का शिकार हो जाते है। बहुत पढ़े-लिखे आदमियों ने भी अपनी भावनओं और वासनाओं पर काबू पाना नहीं सीखा है। उनमें उनकी समझ भ्रष्ट करके वे अपने परिवारों को भी तबाह कर रहें है। क्या परमेश्वर के पास हमारे समस्याओं का हल है? या फिर वे सिर्फ एक भावुक प्रतीक हैं। एक तस्वीर है जो दिवार पर लटकाए जाने के लिए है। जीवित परमेश्वर ने हम से साफ-साफ कहा है: (मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।) यह आप के लिए और मेरे लिए एक वरदान है। या तो यह वरदान सच है, या फिर बोला गया एक सब से बड़ा झूठ है। मगर हम सावधान हो जाएं। क्योंकि इन शब्दों को जिसने कहा है, वह प्रभु यीशु, वही एक मात्र जो छाया के समान बदलने वाले नहीं है। यीशु के बारे में बाइबल कहता है, 'उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली।' (1 पतरस 2:22) तो वह यही है; रक्षक, पाप रहित एक मात्र। निमंत्रण और प्रतिज्ञा के इन शब्दों को कहने वाला: 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' (मत्ती 11:28)

मेरे अपने व्यक्तिगत अनुभव में, मैं ने ऐसे, हजारों - हजार लोगों को देखा है और उनसे मिला हूँ; जिन्होंने प्रभु यीशु के इन शब्दों को परखा है और उन्हें सच पाया है। जब ऐसा लगने लगा है कि सब कुछ खो चुके हैं, जब उनकी छोटी सी दुनिया टुकड़ों में बिखर गई है, जब वे जानते थे कि उनके लिए कोई आशा नहीं बची है, तब वे यीशु के पास गये। और उन लोगों ने यीशु को सच पाया और यीशु ने उनको विश्राम दिया। ऐसे कई आदमी और औरतें, नौजवान और वृद्ध है जिन्होंने यीशु में शान्ति, विश्राम और क्षमा पाई है। इनके बीच में ऐसे लोग थे, जिनको चाहने वाले अपनों ने भी उन्हें असुधार्य और गुमराह जिन्हें पुन: पाना असाध्य समझ कर छोड़ दिया है। और ऐसे लोग भी थे जो खुदकुशी करने के कगार पर थे।

पाप और अपराध के भारी बोझ ने नीचे दबे पीड़ित लोग, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। यह बुलावा सब लोगों के लिए है, जो उदास है, बार बार झटके लगने से हिल गये है, घबराहट से शक्तिहीन, शरीर और मन में कमजोर लोग और जो निराशा में है। 'मेरे पास आओ,' उद्धारकर्ता आपको बुला रहें है।

एक दफा एक कॉलेज में पढ़ रहे एक विद्यार्थी ने मुझे चिट्ठी में लिखा; 'हो सकने वाले हर एक पाप को मैं ने किया है, क्या मेरे लिए कोई आशा है?' वह विकृत यौन कृत्यों में लिप्त था, जिस से कि वह कमजोर और व्याकुल बन गया था। यह समझकर कि वह बहुत दूर भटक चुका है, वो निराशा में था। मैं ने जवाब में लिखा, 'हाँ, जब तुम पश्चाताप करोगे, तुम्हारे लिए आशा है, ।' प्रभु यीशु ने उस लड़के को छूआ। शान्ति और पापों की माफी उसे दी।

मैं अचम्भा करने लगा हूँ कि क्या कुछ लोग वास्तव ही गंभीर रूप से, हर तरह के स्थानों की पुण्य यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं। कुछ लोग क्रिसमस मनाने बैतलेहेम जाते हैं। एक स्थान, चाहे जितना भी वह पवित्र

हो, आपके आत्मा की गहरी जरूरत को वह पूरा नहीं कर पायेगा। वह 'एक व्यक्ति' है, जिसकी आपको जरूरत है - उद्धारकर्ता यीशु, जो 'मेरे पास आओ' कह कर आप को बुला रहे है।

लोगों को एक नुसख़ा चाहिए, एक वाक्य या जादुई दो शब्द जिससे की उनका काम चल जाये और आराम पहुँच जाये। या फिर वे एक तावीज़, कोई स्मारक अवशेष या तिलिसमात माँगते है कि वे उनको गले में या फिर बाहों में पहने, जिस से की उनको सुरक्षा का एहसास हो। अपना संकट में वे महंगे चढ़ावा देने के लिए तैयार हो जाते है, ताकि वे किसी मिथक व्यक्ति या कोई स्वघोषित ईश्वरीय-आदमी का अनुग्रह पा सकें। वे एक चर्च में जुड़ जाने के लिए तैयार हो जाते है जैसाकि वे किसी क्लब में शामिल होते हैं, इस आशा से कि उनकी समस्याओं का हल उनको मिल जाये।

नहीं, मेरे दोस्त, आपको एक व्यक्ति, के पास जाना होगा। वो आपसे प्रेम करने वाला, ' मेरे पास आओ कहकर आपको न्योता देने वाले उस उद्धारकर्ता के पास आपको जाना होगा। कुछ समय पहले एक नौजवान से मुझे चिट्ठी मिली। लिखा था कि उसने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया और शादी करने कोई अच्छी लड़की मिल जाय, वह यह खोज रहा है। उसका शादी बिलकुल टूट चुकी थी। लगता है उसकी पत्नी के जीवन में यीशु के लिए कोई स्थान है ही नहीं। लगातार तनाव के कारण, दोनों ने मानसिक रूप से हानि का अनुभव किया है। मैं ने उसको लिखा 'नहीं, तुम्हारी पत्नी को वापस लाने में परमेश्वर में समर्थ है। प्रभु यीशु नहीं चाहते है कि जब पत्नी जिन्दा हो, तो कोई भी आदमी किसी दूसरी औरत से शादी करे। ऐसा काम व्यभिचार माना जायेगा। अपनी पत्नी के वापस लोटने के लिए दरवाजा खुला रखो।' उसने मेरी बातों पर गौर किया। उसने अपने आप को शुद्ध करना और अपने पापों से छुटकारा पाने का प्रयास करने शुरु किया। अंधकार शक्तियों से छुटकारा पाने और तबाह अपनी गृहस्थी को पुनः निमार्ण करना शुरू किया। प्रभु ने हमारी प्रार्थना सुन ली। इस हफ्ते उस नौजवान से यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि उसने अपनी तलाक शुदा पत्नी से दुबारा शादी कर लिया और अब वे दोनों साथ-साथ जी रहे है! यह परिवार यूरोप के मध्य भाग में जी रहे है जहाँ विवाह का संबंध कमजोर हो गया है और शारीरिक वासनायें अत्यंत प्रबलता से राज कर रहे है। अब वे चाहते है कि मैं उनके क्षेत्र के कुछ कस्बों में जाकर प्रचार करूँ।

वह प्रभु यीशु ही हैं जिसने इस नौजवानों के घर को बसाया। यीशु को अपनी गृहस्थी का केन्द्र ना बनाकर वे मानसिक स्तर पर बरबाद हो चुके थे। प्रभु यीशु के शब्द, व्यर्थ शब्द नहीं है, 'मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।' यह शब्द कितना सत्य है!

एक आदमी को आत्मा की गहराई में, कोई दूसरा आदमी विश्राम नहीं दे सकता। उसके माता-पिता भी नहीं, बल्कि सिर्फ यीशु मसीह। वो गहरा, स्थिर विश्राम आपको देने का सामर्थ्य उन में है। आप के पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य उन में है।

अनजाने में ही आप में दोषी होने का एहसास कायम है। क्षमा ना हुए पापों ने आपकी जिन्दगी में अपने अचेत मन में हलचल और हड़बडी मचाई हुई है। अचेत मन में दोष का एहसास बीमारी पैदा करता है। ऐसी बीमारियाँ आपको बेचैन कर देती हैं। डॉक्टर या कोई मनोवैज्ञानिक आपकी मदद नहीं कर पायेंगे।

'मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' यह कोई चिकना, सुखदायक सूत्र नहीं, जो दूर से,धार्मिक तौर पर अत्यंत ताजगी देनेवाले शब्द साबित हो। आपको और मुझे इस विश्राम की जरूरत है। वास्तव में, इस मधुर विश्राम और शान्ति के बिना जीना ही व्यर्थ है। तब वह सिर्फ सूना, पीड़ा से भरा, उबाऊ अस्तित्व ही होगा।

'मैं तुम्हे विश्राम दूंगा।' यह एक वादा है, जो जरूर लगता होगा कि सच साबित होने के लिए इतना अच्छा है कि वह नामुमकिन हो। मगर मानो या ना मानो यह वास्तव में सच है। लाखों ने इस शान्ति और विश्राम को पाया है, जो यीशु आपको देते है। और आपको भी, मेरे प्रिय श्रोता, आपको भी यीशु को चखना होगा।

- जोशुआ दानिएल।

.... यीशु के प्रेम... पृष्ठ 1 से

यहूदिया, यरूशलेम व सूर और सैदा के समुद्र-तट से विशाल जनसमूह वहाँ उपस्थित था। वे उसका उपदेश सुनने और रोगों से छुटकारा पाने आए थे, और वे जो अशुध्द आत्माओं द्वारा सताए हुए थे, अच्छे किए जा रहे थे। समस्त जनसमूह उसे छूने का प्रयत्न कर रहा था, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर उन सब को चंगा कर रही थी।" (लूका 6: 10-19)।

यीशु ने कहा, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।" यीशु पापियों को बचाने आया था। लोगों ने पश्चाताप किया और अपने पापों को स्वीकार किया। लेकिन एक शिष्य ने अपने दिल को बंद कर लिया। जब तक कि उसके अपने पाप ने उसे मार नहीं दिया, उसने अपने पापों को छुपाया। लेकिन दूसरों ने एक नई दुनिया बनाई। हजारों लोगों ने उनका अनुसरण किया। आनंद, शांति और एक नया प्रेम उस नये समाज में कार्य करता था।

यीशु के पास शक्ति है जो परमाणु शक्ति से बढ़कर है। मनुष्य इस शक्ति का उपयोग विनाश के लिए करता है। यीशु, समाज में शांति और सदभाव लाने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं। पैसा हमें खुश

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

नहीं करता और हमें मंगल-कामना नहीं देता है। पृथ्वी पर स्वर्गीय शक्ति लाने और दुष्टों को बदलने के लिए आप रात भर प्रार्थना कर सकते हैं। जितना अधिक हम परमेश्वर को जानते हैं, हम पाते हैं कि हम अपने भाई से नफरत नहीं कर सकते। जब आप अपने भाई से प्यार करने लगते हैं, तो आप उसके बोझ में भाग लेना शुरू कर देते हैं। पैसे का प्यार आपको नरक में ले जाता है। यह आप की सभी दिव्य क्षमताओं को छुपाता है।

डॉ. जेकेल नाम का एक आदमी था। वह अपने में जो सब बुराई है, उसको बाहर लाना चाहता था। उसने एक दवा की खोज की, जिसे पीते ही वह एक बदसूरत मिस्टर हाइड में सिकुड़ जाता। उस रूप में उसने एक व्यक्ति को पीट-पीटकर मार डाला। जब उसने अपने अपराध के काम पूरे कर लिए, तो वह एक और दवा पीएगा और सम्मानजनक डॉ. जेकेल में बदल जाता। इस प्रकार वह खुद के साथ खेलता था। इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया गया। कभी-कभी दवा के बिना भी, वह मिस्टर हाइड में बदल जाता। पुलिस ने उसकी तलाश शुरू की। एक दिन जब एक पार्क में था, डॉ. जेकेल अप्रत्याशित रूप से हाइड में बदल गया। उसने जल्दी से अपने दोस्त की मदद से, बदलने वाली दवा मंगाई और डॉ. जेकेल बन गया — लेकिन एक दिन यह दवा समाप्त हो गई और वह हमेशा के लिए मिस्टर हाइड रह गया। वह एक कमरे में छिप गया। वह फफक कर रो पड़ा। एक दिन पुलिस ने दरवाजा तोड़कर खोला । इसी दौरान उसने कुछ जहर पी लिया और उसकी मौत हो गई। हम अपने बुरे स्वभाव से प्रेरित काम कर रहे हैं।

हमारे दिव्य स्वभाव को वापस लाने के लिए एक दवा है जो क्रूस को देखने से हमारे पास आती है। हमें "हाइड" का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। यीशु ने शमौन को बुलाया और उसे पतरस में बदल दिया। हममें से कितने लोग पतरस हैं? आपके लिए परमेश्वर का एक बड़ा उद्देश्य है। अमृत जल की नदियाँ आपसे प्रवाहित होनी चाहिए। आप खुद को और अपने पापों को क्यों छिपाते हो? आप पहले से ही नरक में हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हम स्वर्ग में रहें। उद्धार का कार्य पूरा हो गया है और आपको वह उपलब्ध है। क्या आप एक स्वर्गदूत होंगे? अब आप शाऊल हो सकते हैं लेकिन आप एक पौलुस बन सकते हैं। शैतान आपको एक स्वर्गदूत बनने से रोकता है। यीशु की प्रार्थना, हमें बदलने के लिए शक्तिशाली और अद्भुत है।

भारत, एक कठिन जगह है। सेंट थॉमस यहाँ आए और एक आशीर्वाद रहे। अब्राहम एक आशीर्वाद बना था। आपको आशीर्वाद बनना चाहिए।

-एन. डैनियल

पाप से मुक्ति

"प्रार्थनावीर हाइड" एक धार्मिक, प्रेमपूर्ण और असाधारण प्रार्थना करने वाला मसीही था। उन्होंने भारत में कई साल बिताए। वहाँ रहते समय, पहले के कुछ दिनों में, एक बार एक मिशनरी ने खुले में खड़े होकर बात की और हाइड को बताया गया कि वह पाप से छुड़ानेवाला, वास्तविक उद्धारकर्ता के रूप में यीशु मसीह के बारे में वह बोल रहा था। जब उनका बोलना समाप्त हुआ, तो एक व्यक्ति ने आकर उस मिशनरी से पूछा कि क्या वह खुद इस तरह से बचाया गया है। इस प्रश्न ने हाइड के दिल में बहुत प्रभाव डाला - अगर उनसे यही सवाल पूछा जाए तो उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि मसीह ने उन्हें पूरी तरह से नहीं बचाया है। क्योंकि वह जानते थे कि उनके जीवन में एक पाप है, जिसे दूर नहीं किया गया है। उसने महसूस किया कि यह मसीह के नाम पर एक बेईमानी होगी। और उसे कबूल करना है कि वह एक ऐसे मसीह का प्रचार कर रहा है जिसने उसे पाप से नहीं छुड़ाया है, हालांकि वह दूसरों को बताएगा कि वह एक आदर्श उद्धारकर्ता है।

हाइड अपने कमरे में वापस चला गया और कमरे में अपने आप को बंद कर लिया। उसने प्रभु से कहा कि उन दो चीजों में से एक होनी चाहिए: या तो उसे अपने सभी पापों पर विजय प्राप्त करनी है, और विशेष रूप से वह पाप पर जो इतनी आसानी से उसे घेर लिया है, या उसे अमेरिका लौटकर किसी और काम की तलाश करनी है। उसने कहा कि वह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तब तक नहीं खड़ा हो सकता, जब तक वह अपने जीवन में खुद इसकी शक्ति की गवाही नहीं दे सके। प्रभु ने उसे आश्वासन दिया कि वह उसे सभी पापों से मुक्त करने में सक्षम और तैयार है, और उसने भारत में उसके लिए कार्य की योजना बनाई है। सचमुच उसने उसका उद्धार किया! हाइड इसके बाद गवाही दे सका कि प्रभु ने उसे विजय दिलाई है। वह इस बात का गवाह था और उसने अपने प्रभु, अपने उद्धारकर्ता, मसीह की अद्भुत विश्वासयोग्यता को बहुत चाहत से सब को बताया करता था।

— कैप्टन ई. जी. कार्रे (एड़.), प्रेयिंग हाइड, अपोज़ल ऑफ प्रेयर: जॉन हाइड की जीवन कहानी।

पाप और प्रलोभन

बिली ग्राहम, बीसवीं सदी के सबसे प्रसिद्ध प्रचारकों में से एक थे। एक प्रसिद्ध प्रसारक, डेविड फ्रॉस्ट ने तीन दशकों की अवधि के दौरान उनका साक्षात्कार लिया।

एक दिन, फ्रॉस्ट ने उनसे पूछा: "आप किस तरह के प्रलोभनों को महसूस करते हैं?"

ग्राहम: बाइबल कहती है कि जैसा हमारे साथ होता है वैसे यीशु मसीह को भी सभी विषयों में लुभाया गया, फिर भी वह पापरहित है। तीन मुख्य प्रलोभन हैं जो मनुष्य सामना करते हैं। शरीर की अभिलाषा है। आंखों की लालसा है और जीवन का अहंकार है। ये तीनों प्रलोभन हैं जो शैतान हर दिन हमारे पास लाता है। हमें हजारों अलग-अलग तरीकों से लुभाता है और विभिन्न कोणों से हमारे पास आता है। लेकिन हमेशा यह तीन मुख्य रास्तों का प्रयोग करता है। यह वही है जो उसने अदन के बाग में आदम और हव्वा पर इस्तेमाल किया था। यह वही है जो जंगल में प्रलोभन के पर्वत पर, यीशु को लुभाने इस्तेमाल किया गया था। और उसने अपनी रणनीति नहीं बदली है। ... और आदमी अभी भी उसी पुराने तर्कों के सामने गिर रहा है।

फ्रॉस्ट: उन तीनों में से किसके साथ आपका सबसे अधिक सामना होता है?

ग्राहम: वे तीनों ही। ... अब, प्रलोभन का

सामना करना पाप नहीं है। जब मैं उस प्रलोभन के अधीन होता हूँ, तब वह पाप है।
फ्रॉस्ट: तो यह जरूरी नहीं वह विचार पाप है ... मगर वह प्रतिबद्धता है।
ग्राहम: उस विषय के बारे में बार बार सोचना है। यह मेरे दिमाग में चल रहा है और कह रहा है, "हाय, मैं इसका मज़ा लूं ..."
फ्रॉस्ट: यह विचार का आनंद लेना है।
ग्राहम: हाँ, यह सही है। ... यही पाप है। और यह बाइबल में बुरी कल्पना कहा गया है। और वह उन पापों में से एक था जिसके कारण मानव जाति का विनाश हुआ है। या, जैसे कि ग्राहम जी ने एक बार कहा था, "एक विचार प्रवेश करता है; हम इसे लाड़ प्यार करते हैं; यह एक बुरे कार्य में उगता है और बढ़ता है।"

जब उनसे कुछ प्रसिद्ध नामों के सार्वजनिक पतन के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा: "हम सभी लुभाये जाते हैं। मुझे लगता है कि अगर उन्होंने महसूस किया होता कि क्या हो रहा है, और उनके जीवन के सबसे गहरे हिस्से में वे प्रभु की ओर मुड़ गए होते, तो वे गिर नहीं गए होते। ... "

"किन तरीकों से आप प्रलोभन में आए हैं?" फ्रॉस्ट ने पूछा।
ग्राहम: "मुझे लगता है ... लगभग हर तरह के। मुख्य रूप से मेरी सोच प्रक्रियाओं में, मैं झुक गया हूं। मैंने कभी व्यभिचार नहीं किया है। ... मुझे लगता है कि परमेश्वर ने मुझे बचाये रखा। ... और मुझे लगता है कि परमेश्वर ने ही मेरी रक्षा की है। लेकिन ऐसे समय थे जब प्रलोभन तीव्र था। ... "
फ्रॉस्ट ने उनसे यह भी पूछा कि उन्हें क्या लगता है कि वे किन प्रलोभनों के सामने झुके।
ग्राहम: मुझे लगता है कि मैंने अभिमान के प्रलोभन के सामने झुका हूं, हालांकि मुझे इसके बारे में एहसास नहीं है। लेकिन मुझे लगता है कि मैं झुका था। मुझे लगता है कि वह गर्व नंबर एक पाप है जो एक आदमी को गिरा सकता है। वह शैतान का पाप था। यही सबसे बड़ा पाप है। मूर्ति पूजा और अभिमान, वे एक साथ चलते हैं। ... आज, मुझे इसके विपरीत महसूस होता है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं फर्श पर रेंगने वाला एक कीड़े के अलावा और कुछ नहीं हूं। न्यायनिर्णय को छोड़, परमेश्वर से मुझे किसी भी तरह की कोई मान्यता नहीं मिलनी चाहिए...

फ्रॉस्ट: आप बड़े सैद्धान्तिक भाव में कहते हैं कि हम सभी पापी हैं .... क्या आप इसके अलावा, छोटे पापों के बारे में भी सोच सकते हैं? ...
ग्राहम: बिल्कुल। मेरा मतलब है, मुझे लगता है हम सभी कर सकते हैं। मुझे याद है, एक समय था ... मैंने अपने पिता से झूठ कहा था। ... और यह निश्चित रूप से, मसीह में मेरा मन फिराने से पहले था। और मैं हर तरह की छोटी चीजों के बारे में सोच सकता हूँ। अब, वे आज की चीजों की तुलना में बहुत छोटी चीजें होंगी। लेकिन यह वह नहीं है जिसके बारे में परमेश्वर चिंतित है। और बाइबल जिसके बारे में है। वे केवल उस बीमारी के लक्षण हैं जो अंदर गहराई में हैं। असली बीमारी रक्त को मलिन करने वाली एक बीमारी है जिसे हम "पाप" कहते हैं।
क्या बिली ने पहले की तरह ही, उसी उत्साह के साथ पाप और प्रलोभन के विषयों से निपट लिया था? उसने उत्तर दिया: "मैं उसी सुसमाचार का प्रचार कर रहा हूँ जो मैंने हमेशा प्रचार किया है।" कुछ भी हो, मैं अधिक और अधिक शिष्यत्व की लागत पर जोर दे रहा हूं। मैं ऐसे एक भी नैतिक मुद्दे के बारे में नहीं जानता, जिसके बारे में मैंने एक या किसी अन्य समय पर नहीं बोला हो - रंगभेद, नस्लवाद से लेकर परमाणु हथियारों और शांति जैसे सभी कुछ विषय। ... 'पाप' और 'पापों' में अंतर है। 'पाप' (एकवचन) है, जो हमारी आध्यात्मिक बीमारी का मूल है। और 'पापों' (बहुवचन) हैं, जो बीमारी का फल या संकेत हैं। यदि मैं अपना सारा समय पापों (बहुवचन) पर बिताता हूं, तो मैं कभी भी मूल कारण से नहीं जुड़ पाऊंगा, जो 'पाप' (एकवचन) है। प्रभु यीशु मसीह 'पाप' से निपटने के लिए क्रूस पर मरे, न कि केवल व्यक्तिगत पापों केलिए।"
पाप और बुराई के विषय पर, फ्रॉस्ट ने बिली से पूछा: "क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात की है जिसके बारे में आपने सोचा है, यह एक बुरा आदमी है?"
ग्राहम: नहीं ... मैं वास्तव में हर किसी से प्यार करता हूँ। ... और मैंने ऐखमैन और हिटलर की तस्वीरें देखीं है और इस तरह के कई लोगों को। मुझे यकीन है कि आज भी हजारों लोग ऐसे हैं जिस पर बुराई हावी है। ... मुझे लगता है कि एक अलौकिक बुरी शक्ति है जो उन पर हावी है। और यीशु के दिनों में, वे इसे दुष्टात्माग्रस्त कहते थे।
हालाँकि, उन्होंने यह भी कहा: "सब लोग बुराई की प्रवृत्ति के साथ पैदा हुए हैं। मेरा मतलब है, हम सभी के भीतर बुराई का बीज है। घृणा, वासना और लालच का बीज, जिसे मूल पाप कहा जाता है। "
उसने कहा, "सब कुछ इंसान के दिल से पैदा होता है, और हमारे दिल पाप से भ्रष्ट हो गए हैं। मेरे निर्णय में, पाप का एकमात्र हल, मसीह है। "
यह परमेश्वर के प्रेरित वचन में लिखा हुआ है कि कोई भी व्यक्ति, व्यवहार के लिए एक नीव उसी वचन में पा सकता है।
पाप के बारे में उनका अंतिम जवाब था: "जब हम अपने जीवन में पाप को बना रहने देते हैं तो परमेश्वर के साथ हमारी संगति टूट जाती है।"
- सर डेविड फ्रॉस्ट कृत संवाद "बिली ग्राहम: डयलॉग्स ऑन फेइत, फैमिली ऐन्ड मोर" © 2018।
डेविड. सी. कुक की अनुमति से इस्तेमाल किया गया। आगे प्रजनन मना है। सभी अधिकार संरक्षित हैं।

सत्य की परख!

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"- यीशु मसीह। (यूहन्ना 3:16)

"चोर केवल चोरी करने, मार डालने, और नाश करने को आता है। मैं इसलिए आया हूं कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएँ।" - यीशु मसीह। (यूहन्ना 10:10)

स्वर्गीय चंगाई का स्थान

एमी कारमाइकल बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में, भारत में एक प्रसिद्ध मिशनरी बन गई। उन्होंने दूसरों के साथ मिलकर, दोह्नावुर फैलोशिप में कमजोर बच्चों की देखभाल की; उसे प्यार से "अम्मा" कहा जाता था, जिसका अर्थ है "माँ"।

30 जनवरी 1921 की शाम को, आठ लोगों का एक समूह मैदान की ओर देख रहा था। वहाँ से गाँव और मंदिर के टॉवर देखे जा सकते थे। और मुसलमानों का एक किला भी पहाड़ के परे था। तब ब्रिटिश भारत के इस हिस्से में कोई चिकित्सा मिशन नहीं थी, जो विशेष रूप से उन लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रही थी जो सुसमाचार से अप्रभावित थे।

अब छाया में, जैसे कि उन्होंने उस मैदान की ओर देखा, और उस दर्द के बारे में सोचा जो वहाँ मौजूद था। उन छोटे-छोटे कस्बों में, बंद कमरे में छिपे, उन मसीह-रहित दिलों की ज़रूरत और दर्द के बारे में उन्होंने सोचा। ऐसा लगा था कि मानो उनके सामने 'चंगाई का एक स्थान' तैर कर आया है। इस स्थान पर उन लोगों द्वारा सेवा की जाएगी जो अपने प्रभु से प्रेम करते थे और बीमारों की सेवा करते थे; वे एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे, और पैसों का उन पर कोई प्रभाव नहीं था।

यह विचार बिल्कुल नया तो नहीं था। फिर भी उस शाम, उन्होंने 'प्लेस ऑफ़ हीलिंग' की अपनी आशा को शब्दों में रखा और इसे अपनी लॉग-बुक में लिखा। और इसकी पूर्ति के लिए प्रार्थना करने के लिए अपने नामों का हस्ताक्षर किया। "क्योंकि दर्शन एक निर्धारित समय के लिए है; यह शीघ्र ही समय पर पूरा होगा, और इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें कुछ समय लगे, फिर भी इसकी बाट जोहते रहना, क्योंकि यह निश्चित पूरा होगा, इस में देर न होगी।" यह शब्द थे, जबकि बार-बार सफल होने में देरी हो रही थी। एक निश्चित भावना के साथ, वे जानते थे कि यह शब्द एक आध्यात्मिक दर्शन है।

सामान्य नेतृत्व करने वाले एक व्यक्ति के लिए प्रार्थना की पेशकश की गई थी। वह ऐसा व्यक्ति हो जिसे उसी स्वर्गीय दृष्टि को दिखाया गया है ताकि वह उससे पीछे न हटे या उसने जो देखा है उसका संदेह न करे। कई बार ऐसा लगता था कि वे बहुत ज्यादा माँग रहे थे। एंड्रयू मुर्रे ने एक बार जो कहा था, वह अक्सर मदद करता है: : "मैं इस विश्वास से भरा हुआ हूँ कि ईश्वर अपने तरीके से और अपने समय में, कदम से कदम मिलाकर हमारे पास उस आशीर्वाद को प्रकट करने जा रहे हैं। वह आशीर्वाद जो उनके पास है, और जिस दया से वे हमें दिखाने जा रहे हैं। तो आप इस तरह की संभावना के साथ सोच सकते हैं- मुझे लगता है जैसे मेरे पास बेहतर सीखने के लिए एक सबक है, और मैं इसे सीख रहा हूं: बस बैठकर निहारूं और ईश्वरीय अनुग्रह से कहूँ कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं उम्मीद नहीं कर सकता कि उनकी चमत्कारिक दयालुता न कर सके "

प्रभु यीशु ने एक अस्पताल तो प्रदान किया; हालाँकि, पहले उसने एक प्रार्थना का घर बनाने की अगुवाई की। "जब मेरा प्रार्थना का घर बन जाएगा, मैं अस्पताल के लिए इंतज़ाम करूंगा।"

दिनांक संबंधित विषय ध्यान देने लायक हो सकते हैं, और इसलिए वे शब्द भी जो उन तिथियों पर परमेश्वर के वचन का सामान्यतया पढ़ते समय सामने आए थे। 30 जनवरी 1921 को, उन्हें इस नए कार्य के बारे में नए तरीके से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया गया। ठीक पांच साल बाद, वह व्यक्ति, जो खुद और उनके लिए भी अज्ञात था, उस नए काम के लिए प्रार्थना का जवाब था, वह एक यात्रा के लिए उधर पहुंचा। वह आया और चला भी गया। और वे परमेश्वर के कार्य का इंतजार करते रहे। लेकिन उन दो शामों को, परमेश्वर के वचन का यह शब्द उन तक पहुँच गया था, "मैं उन योजनाओं को जानता हूं जिन्हें मैंने तुम्हारे लिए बनाई हैं ऐसी योजनाएं जो हानि की नहीं परन्तु तुम्हारे कुशल की हैं, कि तुम्हें उज्ज्वल भविष्य और आशा दूं।" अगले साल के 25 अगस्त को, नए अस्पताल के निर्माण के लिए £100 का एक उपहार आया, और उनके लिए इंतज़ार कर रहे शब्द थे: "जो खरी चाल चलते हैं उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा।"

30 जनवरी 1928 को वे आगे बढ़े। एक या दो लोगों को पहले से ही दिशा की स्पष्टता का अनुभव था जिसके कारण वे बिना किसी हिचकिचाहट के आगे बढ़े। एक अस्पताल के लिए उपयुक्त भूमि के बारे में पूछताछ शुरू हो गई थी। हालाँकि, यह महत्वपूर्ण था कि फेलोशिप में एकता हो। एकता में इसीलिए पहुँचाया जाए कि वे एक साथ मिलकर जो कुछ भी सामने आये, शांति और आत्मविश्वास के साथ उससे गुजर सकें। इसके बिना आगे बढ़ना आपदा में बदल सकता है। जो पहले से ही दिखाया गया है, इस बात पर विचार करने एक गंभीर समय नियमित किया गया था कि प्रभु के मन को जानने की कोशिश की जाय। जांचे जाने की एक जलन भावना के साथ, वे शुद्ध भी किये गये। वह परमप्रिय की आवाज को पहचानने का प्रशिक्षण मिल चुका है- क्या ही आत्मा की वह आदत थी कि अब तक वह पहचानने इतनी सावधानी बरतें? परमेश्वर की उपस्थिति की देखरेख में उन्होंने अपनी आत्मा में आराम पाया। और उनकी पुस्तक, बाइबल में उन्हें निश्चित दिशा मिली। परमेश्वर ने अपना वचन दिया और वे विश्वास में सुनिश्चित अपने घुटनों से उठ गए; प्रभु की अगुवाई से कभी-कभी विश्वास की छलाँग लगाई जानी चाहिए। जैसे कि पहले इस्राएल के याजकों को, वादा किए गए देश जाने के मार्ग पर, यर्दन नदी का दो में विभाजित होने से पहले ही नदी में प्रवेश करना पड़ा था। 20 जनवरी को एक दोस्त का एक पत्र आया था, और अम्मा ने इसे पूरी फैलोशिप में पढ़ा। लेखक ने सुझाव दिया कि यहोशू 3:15 में "उतरना" शब्द का अर्थ है "कूद पड़ना": हमें भी कई बार विश्वास के साथ एक छलाँग लगाने की जरूरत है न केवल धीमी, सतर्क कदम, और फिर चीजें होती हैं।"

आवश्यक भूमि खरीदने के लिए पर्याप्त एक उपहार, उस दोपहर की अगुवाई की पहली पुष्टि थी। समय के साथ, और विश्वास से ही आवश्यक भूमि के भूखंडों को वे खरीद सके।

इसके अलावा, परमेश्वर के वादों के अनुसार, एक डॉक्टर को अस्पताल के काम का नेतृत्व करने के लिए प्रदान किया गया था।

"यदि मुझे यह विश्वास न होता कि जीवितों की भूमि में यहोवा की भलाई को देखूंगा, तो मैं हताश हो गया होता। यहोवा की प्रतीक्षा करता रह। हियाव बांध और तेरा हृदय दृढ़ बना रहे। हाँ, यहोवा ही की प्रतीक्षा करता रह।" (भजन संहिता 27:13,14)

एक दिन एक हिंदू नगर के बाज़ार में, एक बलवान बाज़ारू आदमी ने कहा, "आप दोह्नावुर में एक अस्पताल बनाने जा रहे हैं - हमने ऐसा सुना हैं," और मुस्कुराहट से उसका चेहरा खिल गया। "आप इसे स्वर्ग बना देंगे।" जिन दो लोगों ने इसे सुना था, यह बात इतना अप्रत्याशित था कि उन्होंने अपना आश्चर्य और खुशी को अनायास जाहिर किया। "हाँ, एक स्वर्ग," उन्होंने जोरदार ढंग से कहा।

प्रार्थना, विश्वास और मार्गदर्शन के माध्यम से, परमेश्वर ने डॉक्टरों, भूमि, एक नेता, और दोह्नावुर के चिकित्सा सेवा में कुछ बच्चों के लिए उपयोगी रोजगार प्रदान किया। यह उनकी महिमा के लिए था। और उन लोगों की भौतिक और आध्यात्मिक भलाई के लिए था, जिनकी वे सेवा करते थे।

- 'ऐमी कारमाइकल, गोल्ड कॉर्ड: द स्टोरी ऑफ ए फेलोशिप' (लंदन: एस पी सी के), www.archive.org से चुनीहुई।